

Living the

LOTUS

Buddhism in Everyday Life

2
2017

VOL. 137

FOUNDER'S ESSAY

आदतन शिकायत करना हमें स्वतः ही दुःखी बनाता है

जैसी की कहावत है, “जिह्वा से चला बाण, बाण से गहरा घायल करता है,” जिह्वा से निकला बिना सोचा समझा शब्द दुर्भाग्य का कारण बन सकता है। बोधिसत्त्व समन्तभद्र समाधि विधि सूत्र, जिसे प्रायश्चित्त विधि सूत्र भी कहा जाता है, में उल्लेख है कि “जिह्वा अनुचित वचनों द्वारा पाँच प्रकार के अकुशल कर्म कराता है।” अष्टांगिक मार्ग के कुशल कर्म हमें झूठ बोलने, द्विअर्थक बातें करने, पर निन्दा करने, चिकनी चुपड़ी बातें करने से विरत रहने की शिक्षा देता है। ये सब आत्मकृत संकट का कारण बनते हैं। परन्तु, क्या आदतन शिकायत करने की आदत हमारे अपने कार्यों में सबसे अधिक व्यवधान नहीं उत्पन्न करता है ?

एक बार जब हम शिकायत करना शुरू करते हैं, हमारे असंतोष की तीव्रता दो गुणा तीन गुणा होता चला जाता है। इससे अधिक,

हर चीजों में दोष निकालने की आदत हमारे आसपास के लोगों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। हम अकेले अपने वचनों द्वारा अपना काम बिगाड़ लेते हैं और अपने आपको दुःखी करते हैं।

मैं ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो ठीक विपरीत है। वह सभी चीजों में संतुष्टि का भाव दिखलाता है और शब्दों में भी संतोष प्रकट करता है। वह कहता है जब आप की साधारण चीज की प्रशंसा करते हैं, जैसेकि माँ के बने रोज दिन के खाने के संबन्ध कहता है: मम्मी! “यह स्वादिष्ट है।” ऐसी टिप्पणी से “वह वास्तव में आश्चर्यजनक स्वादिष्ट हो जाता है!

एक ही व्यक्ति के मुख से निकला असंतोष और संतोष के शब्दों में अंतर आ जाता है जो लोगों के बीच के संबन्धों एवं वातावरण में परिवर्तन में ला देता है।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co.), p. 44-45

Living the Lotus
Vol. 137 (February 2017)

Published by Rishso Kosei-kai International,
Fumonkan, 2-6-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo, 166-8537 Japan
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: shanzai.rk-international@kosei-kai.or.jp
Senior Editor: Shoko Mizutani
Copy Editor: Parmita Shekhar
Editorial Staff of RK International

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

GUIDANCE BY PRESIDENT NIWANO

चिन्ता से मुक्त होना

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ



सभी बुद्ध के कार्य हैं

जिस तरह हमारा जीवन चल रहा है, हममें से अधिकतर लोग विविध चीजों को लेकर चिन्ता में हैं। ऐसा लगता है कि हम चीजों के आकर्षण में बह जाते हैं, हमें उनके लिए चिन्ता नहीं करनी चाहिए, उनके लिए चिन्ता का कोई उपयोग नहीं है, वे हमें चिन्ता एवं पीड़ा देते हैं। अपने दैनिक जीवन में आप कभी कभी अन्य लोगों की उल्टी सीधी बातें या बकवास से क्षुब्ध हो जाते हैं या आपका मन किसी बात की चिन्ता में घिर गया है जो बात अभी तक नहीं हुआ?

किसी भी स्थिति में, कुछ लोग हैं जो पूरी तरह से इस तरह की चिन्ताओं से दूर हैं। उदाहरण स्वरूप वेफिक्र उदार छवि के इक्क्यु सोजुन (1394-1481) एवं रियोकान (1758-1831) का नाम ले सकते हैं जो जापानी जैन पुजारी थे और अपने मसखरापन एवं गंभीर कविताओं के लिए बहुचर्चित थे। जहाँ तक हम उनसे संबन्धित चुटकुलों से जानते हैं वे कभी भी उनकी परवाह नहीं करते थे और नहीं उनसे छुब्ध होते थे जो उनके संबन्ध बुरा बोलते थे। माना जाता है कि उन्होंने चिन्ता से मुक्त स्पृहणीय जीवन यापन किया था।

हम विचार करें कि हमारे और उनके बीच कहाँ अंतर आता है। हमारे दिमाग में सर्वप्रथम आता है कि वे सामाजिक मूल्यों, प्रसिद्धि और सम्पत्ति के प्रति चिन्ताकुल नहीं थे। फिर भी हम स्थिति और सांसारिक मूल्यों के मामले में अन्य लोगों के साथ अपनी प्रतिष्ठा की तुलना में सिमट जाते हैं और हमें यहाँ लगता है कि क्या खो देंगे या क्या लाभ होगा के आधार पर निर्णय लेना उपयुक्त समझते हैं।

फिर भी बौद्ध धर्म की हमें शिक्षा है कि जिस किसी से मिलते हैं और जो कुछ हमारे इर्दगिर्द घटनायें घट रही हैं वे बुद्ध के अनुभाव से हमें कुछ महत्वपूर्ण शिक्षा देने के लिए हैं। जब हम साधारण स्थितियों को उसी रूप में स्वीकार करते हैं, वहाँ उच्च या निम्न, लाभ या हानि के बारे में आगे कोई चिन्ता नहीं रह जाती है।

इसलिए हमें इस तरह की चीजों के बारे में अत्यधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

अन्ततः इक्क्यु और रियोकान की आँखों में, प्रत्येक में कुछ है जिसके लिए आभारी होना चाहिए। क्या यह सत्य है कि नहीं ?



चिन्ता का कोई कारण नहीं है

इसके अतिरिक्त, हम उन चीजों की चिन्ता से दुःखी होते हैं जिनको हम बदल नहीं सकते हैं। उदाहरण के लिए मैंने ऊपर दूसरों द्वारा गपशप की बात तथा भविष्य के अनिश्चितता के अनुभवों के संबन्ध, आप कितनी भी चिन्ता क्यों न करें, आपके अधीन कुछ भी करने को नहीं है। दूसरे शब्दों में वैसी चिन्ताओं में उलझने का कोई मतलब नहीं है। यद्यपि हम इसे समझते हैं फिर भी हम नाना प्रकार की चीजों की चिन्ता में रहते हैं और परिणाम में हम चिंता और असंतोष को अपना लेते हैं, और भी अधिक पीड़ित होते हैं।

पुराने जापानी टेलीविजन एनीमेशन शृंखला में, मुख्य चरित्र इक्क्यु, जो ज़ेन मंदिर में नवप्रब्रजित युवक इक्क्यु सोजुन से प्रभावित है, जब कोई समस्या उसके सामने आता है, हमेशा की तरह कहेगा। “इसके लिए चिंता मत करो, इसके लिए चिंता मत करो,” या “घबराओ मत, घबराओ मत; इसे सहज भाव से लो, इसे सहज भाव से लो।” ऐसा करने में, वह अपने मनोभाव को चालाकी से गौन कर देगा। मैंने पहले से ही, आपको इस शृंखला के पहले किशत में बढ़ते क्रोध पर शिनगोन के एक धारणी के जाप द्वारा नियंत्रित करने की विधि से परिचय कराया है। वह धारणी, ओम निकोनिको हारातात्सुमाइज़ोया स्वाहा / Om nikoniko haratatsumaizoya svaha, है जिसका अर्थ, “मुस्कुराओ तथा अपना आपा मत खोओ, ऐसा ही हो,” है। इसलिए जब चिन्ता या असंतोष का पहाड़ बनते भाव का अनुभव हो, क्यों नहीं जाप करने के हतु कोई मंत्र आप स्वयं ढूँढ लें, जैसाकि एनीमेशन पात्र इक्क्यु ने किया था ? आपके मन में चिन्ता एवं असंतोष के बादल उठ रहा है उसे उड़ा ले जाने में मदद करेगा। आपके मनोभाव को बदलने का दूसरा तरीका है कि आप केवल टहलने निकल जायें। इत्मीनान से टहलते हुए, आप अपने को निरर्थक चिन्ता से दूर रख सकते हैं।

जब आप अपनी मनोदशा को इस प्रकार से थोड़े समय के लिए ही बदल देते हैं, आप मूल रूप से बदल सकते हैं और निरर्थक चिन्ता से मुक्त एक ऐसे पुरुष के रूप में निखर सकते हैं जैसेकि इक्क्यु तथा रियोकान थे और आप सुख शान्ति का जीवन यापन करने में समर्थ होंगे। सौभाग्य से, आप सब भी, जो इस लेख को पढ़ते हैं, बुद्ध की उसी देशना से जुड़े हैं जिसका अनुपालन दोनों सद् पुरुष कर रहे थे। आप स्वाभाविक रूप से एक ऐसा व्यक्ति बन जाएँगे जो बौद्धधर्म की मूलभूत शिक्षा को बार बार पढ़कर अनावश्यक चिंता से दूर रहेंगे। यह मूलभूत शिक्षा है – “सभी वस्तुएँ अनित्य हैं,” “सभी वस्तुएँ अनात्म हैं” एवं “सभी वस्तुएँ दुःख के कारण हैं।” साथ ही इस परिप्रेक्ष्य में भी वस्तुओं को बार बार देखने की आदत डालनी है कि प्रत्येक वस्तु की स्थिति बुद्ध के अनुभाव से है और आत्म प्रतिबिंब प्रदर्शन करने के लिए है।

संयोग से, हालांकि हम चीजों के बारे में चिंता करते हैं, जिनकी चिन्ता करने का कोई औचित्य नहीं है। हम सहज उनके बारे में भूल जाते हैं, जिन्हें हमेशा ध्यान में रखना चाहिए। उन चीजों में एक वर्तमान क्षण है। अतीत या भविष्य के संबन्ध सोच विचार करने के बजाय, हमें वर्तमान के हर पल के जीवन को जीना चाहिए। फिर, मुझे आशा है कि हम हर दिन अन्य लोगों का ध्यान रखने का क्रम जारी रखेंगे।

इस महिने के 15 वीं तारीख को शाक्यमुनि बुद्ध के निर्वाण में प्रवेश का वर्षगाँठ मनाते हैं। “निर्वाण” का अर्थ सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त हो जाना है। जब हम बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं और ऐसा जीवन यापन करते हैं जिसमें दूसरों से सहयोग करने का भाव है, हमारा जीवन मुक्त और उज्वल होगा।

From *Kosei*, February 2017



Child Care lifeline

क्यों मेरा पुत्र मैं जो कहती हूँ उसके विपरीत करता है ?

Q

मेरा एक साढ़े तीन वर्ष का बेटा है और एक छह महीने बेटी है। हाल फिलहाल में उस साढ़े तीन वर्ष के बेटाके साथ कुछ दिक्कतें आ रही है, क्योंकि वह मेरे कहने के विपरीत करता है। मैं कैसे इस हालात का सामना करूँ ?



A

आप अद्भुत माँ हैं, क्योंकि आप सावधान हैं और अपने पुत्र के साथ बातचित करने का प्रयास करती हैं। जब बच्चे तीन या अधिक के हो जाते हैं, वे सोचने लगते हैं कि संसार की प्रत्येक वस्तुएँ उनके इर्दगिर्द घूम रही हैं, जिसे “(instinctive self) सहज आत्म.” कहते हैं यही समय है जब बच्चों में एक प्रकार स्वयं की छवि विकसित होती है जो उन्हें सोचने और अपने मन के मुताबिक करने की ओर ले जाता है। इसे “(innocent egocentrism) सहज आत्मकेन्द्रित भाव” कहते हैं। आप अपने पुत्र को विद्रोही समझ सकती हैं, आप के कहने के विपरीत करता है। आप उसके कार्यों को उसके विकास का संकेत समझने की चेष्टा करें और उसके विकास पर प्यार से नज़र रखें। और जब आपका पुत्र आपके कहने के विपरीत करता है, आप अपने क्रोध को दबाकर रखें और उसे प्यार से पूछें कि “क्या हुआ ?, क्यों तुम ऐसा करते हो ?, मुझे बताओ न।”

जब आप अक्सर अपने बच्चों से बातें करती हैं, तो क्या आप एक पक्षीय दृष्टि रखती हैं, खासकर उनको करने को इस तरह कहती हैं जैसेकि उसको करना आपके लिए सहल है ?

मैंने एक कहानी सुनी है जिसमें ऐसी हालात के संबंध चर्चा है।

सुश्री A ने मुझे बताया कि एक दिन भोजन के समय वह अपनी बेटी से कहती है कि “अपना एप्रॉन पहन लो।” पुत्र का जबाब था- “नहीं,” और उनका कुछ नहीं सुनी। उस समय उसकी दादी माँ जो सब देख रही थी तत्क्षण अपनी पौत्री से बोली, क्या मैं तुझे एप्रॉन पहने देख सकती हूँ ? उसने हाँ कहा और एक एप्रॉन लाकर पहन ली। वह खुश थी क्योंकि उसे दिखलाने का आग्रह था, नहीं कि एप्रॉन पहन लेने का आदेश था। बचपन में किसी कार्य को बार बार करने से वह आदत में बदल जाती है। इसलिए यही समय है जब आपको अधिक समय देना है और विशेष प्रयास करना है।

साथ ही, आप अपने छह माह की बच्ची की देखभाल में इतना अधिक ध्यान देती हैं कि आपके पुत्र को उसके लिए आपके प्यार में कमी खलता है। आपके बच्चे की निराशा का कारण उसकी सोच है कि उसके लिए माँ का प्यार उसकी नन्हीं बहन छीन ले रही है। ऐसी सोच इन शब्दों में व्यक्त होता है - “मैं अपने माँ की नहीं सुनना चाहता हूँ।” छोटे बच्चे भी इसके प्रति संवेदनशील रहते हैं कि उनके माता पिता के हृदय में क्या चल रहा है। अपने बच्चों के हृदय से जुड़े रहें और उनके साथ निकट का संबंध बनाये रखें। साथ ही, यदि बच्चे का स्वाग्रह दूसरों को हानी नहीं पहुँचाता है, उसके मूल्य को पहचाने और उसे फलित होने में सहायक बनें। इससे स्वतंत्र विचार का एवं क्रियात्मकता का बीज उत्पन्न होगा जो किसी दिन फूले फलेगा।



Point

स्व के प्रतिजागृति होना बच्चे में “विकासमुखी होने का संकेत है।”

यह देखकर हर्ष होगा कि बच्चे में इतना विकास हो चुका है कि वे अपने विचारों पर अडिग रह सकेंगे। बच्चे जो सदा अपनी माँ के कहे अनुसार नहीं करते हैं वे आवश्यक रूप से बुरे बच्चे नहीं हैं।

(टोक्यो अनुसंधान संस्थान के परिवार शिक्षा द्वारा प्रदान उत्तर)

The Tokyo Research Institute for Family Education इस आधार पर काम करता है कि “यदि माता पिता बदल सकते हैं तो बच्चों में भी परिवर्तन आयेगा। “हम विभिन्न स्थानों में प्रेजेंटेशन देते हैं और संबन्धित माता पिता को अपनी सलाह देते हैं।” “Family education from their children” कार्यक्रम में हमारी मदद से अनेक हँसते खेलते परिवार निकल आये।

शब्द बच्चों का पोषण करता है

जैसी की कहावत है, “यह इस पर निर्भर करता है कि आप शब्दों का कैसे प्रयोग करते हैं”; जिस तरह से माता-पिता अपने बच्चों से बातें करते हैं वे उनको प्रेरित करते हैं और उनके आध्यात्मिक विकास में मदद करते हैं। जैसाकि सुश्री ए के आगे के उदाहरण से हमें स्पष्ट पता चलता है, बच्चे खुश होते हैं जब उनसे कुछ सकारात्मक करने की अपेक्षा की जाती है, वनिस्पत कि उनसे कुछ करने को कहा जाता है। आपका पुत्र तीन वर्ष का हो गया है और यही समय है जबकि बच्चे में सोचने के अपने तरीके के विकास होने का प्रारंभ हो जाता है। अब से, आप अपने पुत्र से जो कुछ बोलेंगे, उनके दिल दिमाग को पहले से अधिक प्रभावित करेगा।

हम बच्चों के साथ किन शब्दों में बातें करें, इस के संबन्ध संस्थापक निक्यो निवानो का दिशा निर्देश इस प्रकार है:

“बच्चे या बच्चियाँ जिनकी नियमित रूप से प्रशंसा की जाती और जिनको भरोसा दिलाया जाता है कि वे निश्चित रूप से एक अच्छे वयस्क के रूप में विकसित होंगे या होंगी और उन्हें ऐसी प्रशंसा मिलेगी कि ‘कितने अच्छे बच्चे हो या कितनी अच्छी बच्ची हो!; अवश्य ही महान वयस्क रूप में विकाश करोगे या करोगी,’ शनैः शनैः वे शब्द सच हो जाएँगे। शब्दों का अपना भाव है। रियोकान (1758--1831) जेन पुजारी, कवि और कैलिग्राफर थे। उनके अनुसार सभी शब्दों का प्रयोग उनके भाव के साथ होनी चाहिए। सही शब्द, जिससे व्यक्ति को खुशी मिले, हमारे होंठों पर योंही नहीं आएगा जब तक कि हम नियमित रूप से दूसरों में अच्छाई देखने का प्रयास नहीं करते हैं।” (Nikkyo Niwano, *Jinsei Kokoro Gake* [Buddhism for Everyday Life], p. 113)

यदि आपके बच्चे आपके कहने के विपरीत कार्य करते हैं, उन्हें उपद्रवी नहीं मान लेना चाहिए। इसके बजाय, उन्हें बढ़ने की प्रक्रिया में देखकर उनके साथ कोमल शब्दों में ऐसा कहें: रोजमर्रा की जिंदगी में “तुम सच में एक अच्छे लड़के हो, कितना अद्भुत है!” उनसे अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर, संवेदनशील नेक शब्दों का प्रयोग करें जो गहरे प्रभावित करेगा और उनके आध्यात्मिक विकास में मदद करेगा।

(धर्म शिक्षा और मानव संसाधन विकास, रिश्शो कोसेइ काई विभाग द्वारा संपादकीय पर्यवेक्षण)



Please give us your comments!



We welcome comments on our newsletter *Living the Lotus*.

Please send us your comments to: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

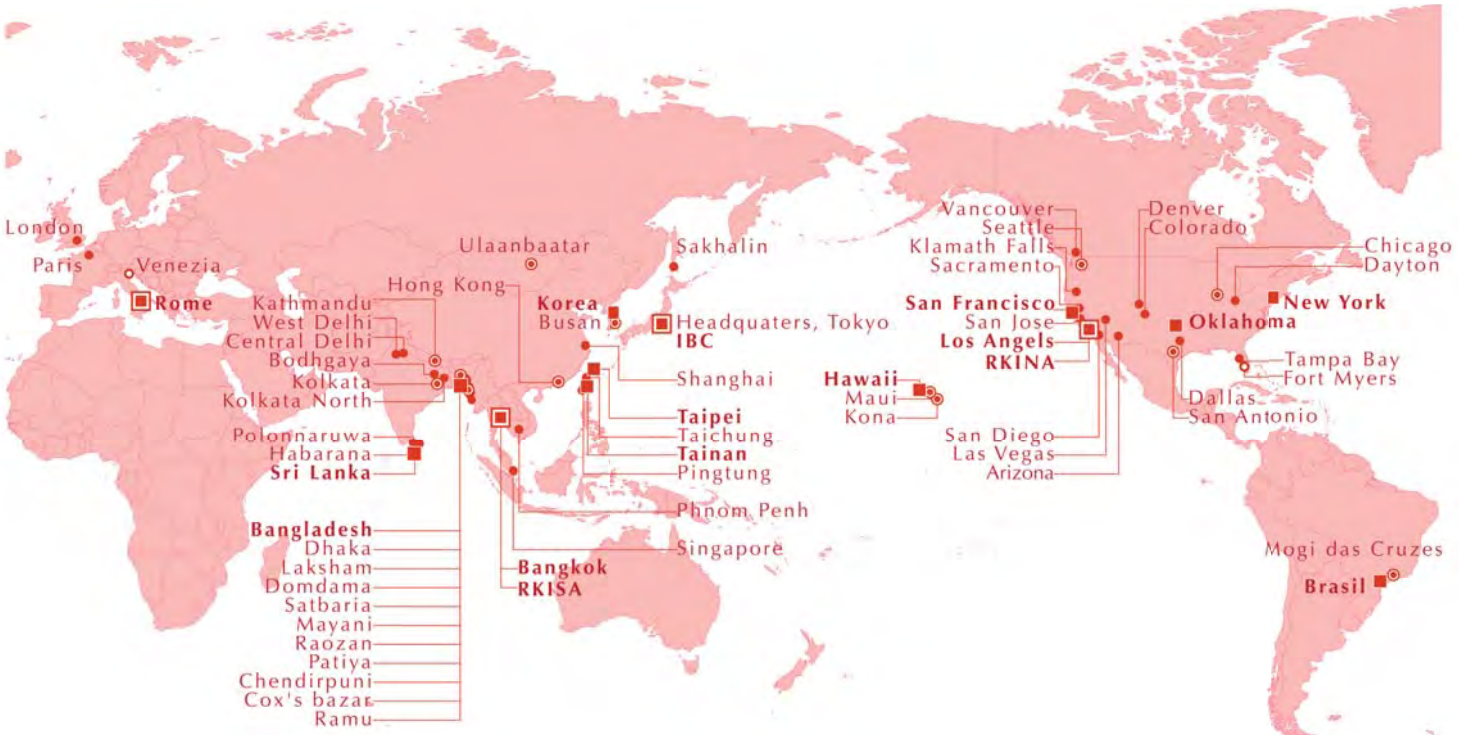
एक युवक के देखभाल से जो सीखा उसके लिए आभारी हूँ

जब मैंने प्रेसिडेंट के नववर्ष 2017 का दिशा निर्देश पढ़ा, मैं करीब 40 वर्ष पूर्व का अनुभव याद करता हूँ। उसके शीघ्र बाद, जब मैंने RK में सम्मिलित हो गया, एक बौद्ध सेमिनार में सीखा कि प्रारंभ से हम अन्य सभी प्राणियों के साथ रहने को आबद्ध है, हमें अपने आसपास जो कुछ है उनके प्रति आभारी होना चाहिए। मुझे दूसरों से समर्थन मिल रहा था लेकिन मैं आभार की भावना को समझने में सक्षम नहीं था।

उस समय के आसपास, मैंने एक माध्यमिक विद्यालय के छात्र की देखभाल (Tedori) प्रारंभ किया, कुछ मायने में वह विद्रोही स्वभाव का युवक था। मैं अक्सर उसे अपने शयनकक्ष में बुला लेता था, गणित पढ़ाया करता था और उसके लिए कुछ पकाया करता था। एक दिन मुझे बताया गया कि वह घर से गायब है। तब मैं अपने कमरे में एक छोटी सी बौद्ध वेदी के सामने बैठ गया और बुद्ध के समक्ष पूर्ण श्रद्धा से पुण्डरीक सूत्र का पाठ प्रारंभ किया। मेरी कामना थी कि वह जहाँ भी है, कुशल रहे। जब कमरे में अंधेरा हो रहा था, मुझे सहज ही बोध हुआ कि मैं हमेशा अपने माता-पिता के प्यार की छाया में रहा हूँ। संभव है वैसे मेरी छत्रछाया मेरी प्रार्थना एवं उसके देखभाल की तुलना में अधिक बलवती रही है। मैं कई लोगों लोगों के आशीर्वाद से जीवन जी रहा हूँ। इस बोध से मेरे कृतज्ञता के आँसू निकल आये। मैं उसके प्रति आभार प्रकट करना कभी नहीं भूलूँगा।

“मानव जीवन दुर्लभ है।” मूल्यवान को मूल्यवान रूप में पहचानने में समर्थ होने से मेरा जीवन आनन्दमय होगा।

रिश्शो कोसेइ काइ अन्तरराष्ट्रीय विभाग निर्देशक
शोको मिजुतानी



Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers

2017

Rissho Kosei-kai International

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles
CA 90033 U.S.A

Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, U.S.A.

Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261

e-mail: rkseattle@juno.com

http://www.buddhistLearningCenter.com

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.

Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745

e-mail: dharmasanantonio@gmail.com

http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.

Tel: (727) 560-2927

e-mail: rktampabay@yahoo.com

http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.

Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633

e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.

Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, U.S.A.

Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.

Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567

e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.

Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437

e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, U.S.A.

Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499

e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, U.S.A.

Tel: 1-773-842-5654

e-mail: murakami4838@aol.com

http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112, U.S.A.

Tel & Fax: 1-405-943-5030

e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Klamath Falls

1660 Portland St. Klamath Falls, OR 97601, U.S.A.

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204, U.S.A.

Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419, U.S.A.

http://www.rkina-dayton.com/

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,

CEP 04116-060, Brasil

Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Fax: 55-11-5549-4304

e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,

CEP 08730-000, Brasil

Tel: 55-11-5549-4446/55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongzheng District, Taipei City 100, Taiwan

Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433

http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Taichung

No. 19, Lane 260, Dongying 15th St., East Dist.,

Taichung City 401, Taiwan

Tel: 886-4-2215-4832/886-4-2215-4937 Fax: 886-4-2215-0647

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan

Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea

Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696

e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea

Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,

North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960
e-mail: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949
e-mail: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK**Rissho Kosei-kai of Venezia**

Castello-2229 30122-Venezia Ve Italy

Rissho Kosei-kai of Paris

86 AV Jean Jaures 93500 Tentin Paris, France

International Buddhist Congregation (IBC)

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 Fax: 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibt-rk.org/>

Rissho Kosei-kai of South Asia Division

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami, Tokyo, 166-8537, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division**Rissho Kosei-kai of Central Delhi**

224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi

66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka
New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar,
Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Singapore**Rissho Kosei-kai of Phnom Penh**

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Thai Rissho Friendship Foundation

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218
e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu**Rissho Kosei-kai Dhamma Foundation, Sri Lanka**

382/17, N.A.S. Silva Mawatha, Pepiliyana, Boralessgamuwa, Sri Lanka
Tel & Fax: 94-11-2826367

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**Rissho Kosei-kai of Habarana**

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Other Groups**Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai**